सुंदर अंतर को फीका करना

इयन पॉल (Ian Paul) और एंड्रयू बार्टलेट (Andrew Bartlett) · जर्मन अनुवाद: Hans-Jörg Ronsdorf · जून 2022 · अक्टूबर 2026 में संशोधित

विशेष रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका में, परन्तु अंग्रेज़ी-भाषी जगत में भी, यह चर्चा फिर से पूरे ज़ोर पर है कि क्या स्त्रियाँ अगुवाई कर सकती हैं और शिक्षा दे सकती हैं। उन लहरों की तरह, जो हर दशक में एक बार मसीही जगत में, और यहाँ विशेष रूप से रूढ़िवादी सुसमाचारवादी (इवैन्जेलिकल) जगत में, उठती हैं। परन्तु तथाकथित पूरकतावादियों (पाइपर (Piper), ग्रूडम (Grudem), केलर (Keller), कार्सन (Carson), मैकआर्थर (MacArthur), बर्क (Burk), डीयंग (DeYoung), डेवर (Dever), मात्थियास लोहमान (Matthias Lohmann) – जर्मनी में बहुत-सी स्वतंत्र कलीसियाएँ (फ़्राइकिर्शे) और E21, EBTC, KFG जैसी पहलें और प्रकाशन, हर प्रकार की ब्रदरन कलीसियाएँ, 3L Verlag आदि) के तर्कों पर, जो यह मानते हैं कि वे बाइबल के आधार पर स्त्रियों को शिक्षा और अगुवाई से बाहर रख सकते हैं, पूरी तरह विचार किया जा चुका है और उनका खंडन हो चुका है। यह लेख एक ऐसे पाठ से संबंधित है जो स्त्री की पदानुक्रम में अधीन भूमिका की इस धारणा को नए सिरे से सिद्ध करने का प्रयास करता है। यह कुछ नया दृष्टिकोण है, परन्तु उतना ही गलत है, जैसा इयन पॉल (Ian Paul) और एंड्रयू बार्टलेट (Andrew Bartlett) की यह आलोचना दिखाती है।

यह DeepL.com की सहायता से किया गया एक कार्य-अनुवाद (जर्मन में) है, छपाई के लिए तैयार प्रस्तुति नहीं। उद्देश्य केवल अर्थपूर्ण प्रस्तुति है, ताकि तर्कों और प्रति-तर्कों को समझा जा सके। वास्तव में मुझे (अपने लिए) कुछ नए विचार मिले, जो मुझे एक बार फिर इस बात में दृढ़ करते हैं कि मैंने इस दृष्टिकोण को पूरी तरह छोड़ दिया है।

Hans-Jörg Ronsdorf 28 जून 2022, ऑग्सबर्ग (Augsburg)

मैंने **Men and Women in Christ: Fresh Light from the Biblical Texts** (IVP, 2019) के लेखक एंड्रयू बार्टलेट QC (Andrew Bartlett QC) के साथ मिलकर न्यूफ़्रंटियर्स (Newfrontiers) के वक्ता और धर्मविज्ञानी एंड्रयू विल्सन (Andrew Wilson) के लेख "**Beautiful Difference: The Complementarity of Male and Female**" की एक बाइबलीय आलोचना प्रस्तुत करने का निश्चय किया है। इस आलोचना के लेखकों और समर्थकों का पूरा विवरण आपको पाठ के अंत में मिलेगा।

विल्सन द्वारा पूरकतावाद का बचाव

पूरकतावाद[1] संकट में है।

1991 में जॉन पाइपर (John Piper) और वेन ग्रूडम (Wayne Grudem) द्वारा संपादित महत्वपूर्ण पूरकतावादी पुस्तक Recovering Biblical Manhood and Womanhood प्रकाशित हुई। परन्तु 2020 में "Recovering From Biblical Manhood and Womanhood" प्रकाशित हुई। शीर्षक से ही विषय-वस्तु का अनुमान हो जाता है। लेखिका, एमी बर्ड (Aimee Byrd), एक धर्मविज्ञानी हैं जो संयुक्त राज्य अमेरिका के एक रिफ़ॉर्म्ड संप्रदाय के भीतर से लिखती हैं, जो अपनी कलीसियाओं में स्त्री अगुवों की अनुमति नहीं देता।

बर्ड की पुस्तक की समीक्षा उत्तरी अमेरिका के एक प्रमुख पूरकतावादी, डेनी बर्क (Denny Burk), ने की। वे खुलकर स्वीकार करते हैं कि एक ऐसी पीढ़ी है जो "पूरकतावाद से बाहर निकलना चाहती है"। वे चेतावनी देते हैं:

"एक पीढ़ी है जो बाहर निकलने का रास्ता खोज रही है, और बर्ड उसे वह रास्ता देती हैं।" उनके पाठक "छलाँग लगाने को तैयार हैं और ऐसा करने के लिए केवल किसी कुछ-कुछ समझदार बहाने की खोज में हैं।"[2]

टेरन विलियम्स (Terran Williams) दक्षिण अफ़्रीका की एक बड़ी कलीसिया में पास्टर हैं, जो पूरकतावाद से जुड़ी है। उनसे कहा गया कि वे उनके दृष्टिकोण का एक बेहतर बचाव तैयार करें और लिखें। जब उन्होंने इस दृष्टिकोण की गहराई से जाँच की, तो उन्होंने पाया कि वे बाइबल से उसका बचाव नहीं कर सकते।[3]

बहुत से लोग वास्तव में पूरकतावाद को छोड़ रहे हैं। स्त्रियाँ मसीह में अपनी पूरी स्वतंत्रता पा रही हैं। पुरुष स्त्रियों को नई आँखों से, अपनी सच्ची सह-योद्धाओं के रूप में देख रहे हैं।

परन्तु **एंड्रयू विल्सन** इन हानियों को रोकने के लिए आगे आए हैं। वे दक्षिण-पूर्वी लंदन की एक कलीसिया में शिक्षा देने वाले पास्टर और प्राचीन हैं, जो न्यूफ़्रंटियर्स कलीसियाओं के परिवार से संबंधित है। हम उनका आदर एक सहृदय और भली मंशा रखने वाले मसीह में भाई के रूप में करते हैं। वे उचित ही एक बुद्धिमान और विचारशील लेखक के रूप में जाने जाते हैं।[4] **वे शायद पूरकतावाद के अग्रणी यूरोपीय धर्मविज्ञानी हैं।**

विल्सन उचित ही इस दृष्टिकोण के कुछ पहलुओं की आलोचना करते हैं। वे स्वीकार करते हैं कि इस दृष्टिकोण ने हमारी बहनों को नीचा दिखाया है, कि इसने युद्ध के बाद के अमेरिका को नए नियम में पढ़ लिया है, कि इसने त्रि-एकता के बारे में अपरंपरागत (अरूढ़िवादी) विचारों का बचाव किया है, और कि इसने भिन्न मत रखने वालों को अनुचित रूप से धर्मवैज्ञानिक उदारवादी कहकर ख़ारिज कर दिया है। फिर भी वे अपनी रेखा पर टिके रहना चाहते हैं और तर्क देते हैं कि परिवार में और कलीसियाओं में केवल पुरुषों को अगुवाई करनी चाहिए।

वे जानते हैं कि बहुत से मसीही, जो अपना विश्वास बाइबल से लेते हैं, पूरकतावाद के पक्ष के मानक तर्कों से आश्वस्त नहीं हैं। **इसलिए उन्होंने इसे बेहतर करने का प्रयास किया है। वे पूरकतावाद को नया नाम "पूरकता" देना चाहते हैं। और वे उसे एक व्यापक बाइबलीय आधार पर रखना चाहते हैं।** उन्होंने यह एक प्रभावशाली लेख में किया है: "Beautiful Difference: The Complementarity of Male and Female" (पुरुष और स्त्री की पूरकता)।[5] यद्यपि वे परिवार में पुरुष की अगुवाई पर भी विचार करते हैं, परन्तु उनका तर्क मुख्य रूप से कलीसिया में केवल पुरुषों की अगुवाई (केवल पुरुष प्राचीन) के बचाव पर केंद्रित है।

लेख आकर्षक और सुंदर ढंग से लिखा गया है – और वास्तव में इसमें कुछ महत्वपूर्ण सत्य हैं जिनसे हम सहमत हैं।[6] **परन्तु क्या यह कलीसिया की अगुवाई को पुरुषों तक सीमित करने के लिए सचमुच ठोस बाइबलीय तर्क देता है? हम ऐसा नहीं मानते।** अपने उद्देश्य के विपरीत, विल्सन की शिक्षा वास्तव में पुरुषों और स्त्रियों के बीच के सुंदर अंतर को हानि पहुँचाती है। वह पूर्ण पूरकता (परस्पर एक-दूसरे को पूरा करने) से पीछे रह जाती है। जबकि वह पुरुषों को सीमित नहीं करती, वह स्त्रियों को इस प्रकार सीमित करती है जैसा परमेश्वर नहीं चाहता। कृपया आगे पढ़िए, यह जानने के लिए कि यह दृष्टिकोण कहाँ गलत है।[7]

विल्सन का तर्क

हम विल्सन के तर्क के एक सारांश से आरंभ करते हैं। वे प्रमाण-पाठों वाली उस पद्धति से हटते हैं जिसका अक्सर उपयोग किया जाता है। इसके बजाय वे पूरी बाइबल को सामने रखने वाला दृष्टिकोण अपनाने का प्रयास करते हैं। उनके मुख्य बिंदु ये हैं:

1. पूरकता परमेश्वर की सृष्टि में निहित है, पुरुषों और स्त्रियों में भी।

2. पुरुष और स्त्रियाँ भिन्न होने के लिए रचे गए हैं। उनकी अपनी-अपनी विशेषताएँ वही हैं जिनकी हमें उत्पत्ति 1-4 से अपेक्षा करनी चाहिए, जहाँ पुरुष (इब्रानी में "भूमि" के शब्द से मिलता-जुलता) को वाटिका की आक्रमणों से रखवाली करने का कार्य दिया गया, और स्त्री, हव्वा ("जीवन" के शब्द से मिलता-जुलता), को सब जीवितों की माता कहा गया।

3. पुरुष और स्त्री की पूरकता विवाह में, परिवार में और कार्यस्थल पर प्रकट होती है। 1 तीमुथियुस 5:1-2 के अनुसार हमें बड़ी स्त्रियों के साथ विशेष रूप से माताओं के समान, बड़े पुरुषों के साथ विशेष रूप से पिताओं के समान, जवान स्त्रियों के साथ बहनों के समान आदि व्यवहार करना चाहिए, न कि लिंग-निरपेक्ष इकाइयों या लिंगहीन, बिखरे हुए श्रमिकों के समान।

4. केंद्रीय बात यह है कि कलीसिया में केवल पुरुषों को ही प्राचीन होना चाहिए, क्योंकि (a) प्राचीनों का कार्य झुंड के चरवाहों के रूप में कलीसिया की रखवाली और रक्षा करना है, और (b) बाइबल के इतिहास के हर चरण में पुरुष ही हैं जिन्हें परमेश्वर के लोगों की रखवाली और रक्षा का कार्य सौंपा गया है:

(a) के समर्थन में वे प्रेरितों के काम 14:22-23; 20:17-38; तीतुस 1:5-9; 1 पतरस 5:1-4 का हवाला देते हैं। (b) के समर्थन में वे सात विषयों का हवाला देते हैं, जिनमें छह उदाहरण और एक शिक्षा-खंड शामिल हैं। उदाहरण ये हैं: आदम, कुलपिता, लेवीय याजक, इस्राएली राजतंत्र, बारह प्रेरित, और नए यरूशलेम की विशेषताएँ, जिसके साथ बाइबल समाप्त होती है। शिक्षा है कलीसिया के प्राचीनों की योग्यताओं की पौलुस की सूची।

5. यद्यपि बाइबल के इतिहास में स्त्रियाँ बड़ी भूमिका निभाती हैं, परन्तु वे स्त्रियों के रूप में ऐसे ढंग से सेवा करती हैं जो पुरुषों की सेवा को पूरा करता है। स्त्रियों के रूप में वे बहुत-सी ऐसी बातें कर सकती हैं जो पुरुष नहीं कर सकते या नहीं करते।

6. कलीसिया को एक परिवार के रूप में देखा जाना चाहिए। इसलिए यह इनकार करना कि स्त्रियाँ प्राचीन हो सकती हैं, ठीक वैसा ही है जैसे यह इनकार करना कि स्त्रियाँ पिता और पुरुष माता हो सकते हैं।

हम पूरी बाइबल को सामने रखने वाला दृष्टिकोण अपनाने के विल्सन के प्रयास की प्रशंसा करते हैं। परन्तु उनका तर्क स्पष्ट रूप से त्रुटिपूर्ण है: वह बाइबल के इतिहास के संबंध में गलत है, बाइबलीय धर्मविज्ञान के विपरीत है और अपनी बाइबलीय व्याख्या में अविश्वसनीय है। हम इनमें से हर बिंदु पर क्रम से विचार करेंगे।

बाइबल का इतिहास

विल्सन के अनुसार बाइबल के इतिहास के हर चरण में पुरुष ही हैं जिन्हें परमेश्वर के लोगों की रखवाली और रक्षा का कार्य सौंपा गया है। इससे उनका अर्थ यह है कि केवल पुरुष, न कि स्त्रियाँ, परमेश्वर द्वारा परमेश्वर के लोगों की रखवाली और रक्षा के लिए बुलाए गए हैं।

परन्तु यह बिल्कुल सच नहीं है। प्रमुख विपरीत उदाहरण उनके दावे का खंडन करते हैं:

- मिस्र से इस्राएल के निकलने के समय, मूसा के अतिरिक्त, परमेश्वर ने किसे यह कार्य सौंपा कि वह लोगों को सुरक्षित जंगल में से ले चले? मूसा के भाई और बहन – हारून और मरियम (Mirjam) को। देखिए निर्गमन 15:20-21; गिनती 12:1-2; मीका 6:4।

- "न्यायियों" के समय में परमेश्वर दबोरा (Debora) को नियुक्त करता है कि वह इस्राएल के लोगों की अगुवाई करे और उन्हें छुड़ाए – झगड़ों का निपटारा करके, भविष्यद्वाणी करके और युद्ध में लोगों का मार्गदर्शन करके (न्यायियों 2:16-19; 4-5)।
- राजा योशिय्याह के समय में परमेश्वर हुल्दा (Hulda) को भविष्यद्वक्तिन के रूप में बुलाता है, ताकि वह राजा और लोगों की अगुवाई करे और एक जागृति लाए (2 राजा 22:11–23:3)।[8]
- नए नियम में प्रिस्किल्ला (Priscilla) इफिसुस की उभरती कलीसिया को एक अपर्याप्त शिक्षा से बचाती है (प्रेरितों के काम 18:18-28)। जिस प्रकार लूका यह कहानी सुनाता है, उससे पता चलता है कि वह इसे परमेश्वर का विधान मानता है।[9] उसने पौलुस का जीवन बचाने के लिए अपनी गर्दन भी जोखिम में डाली (रोमियों 16:4)।[10]
- यूनिया (Junia), जो पौलुस के साथ बंदीगृह में थी, परमेश्वर द्वारा प्रेरित होने के लिए बुलाई गई (रोमियों 16:7)। उसका प्रेरित-पद उसी प्रकार का था जैसा अपुल्लोस और बरनबास का, जो यात्रा करने वाले सुसमाचार-प्रचारक और कलीसियाएँ स्थापित करने वाले थे।[11] किसी प्रेरित की शिक्षा कलीसिया को सुरक्षित रखने और उसकी रक्षा करने में योगदान देती है।

विल्सन के चुने हुए कुछ उदाहरण भी यह नहीं दिखाते कि परमेश्वर ने केवल पुरुषों को ही परमेश्वर के लोगों की रक्षा के लिए बुलाया है।

पहला: आदम। विल्सन कहते हैं कि उसे वाटिका में इसलिए रखा गया "कि उसकी सेवा करे और उसकी रखवाली करे" (उत्पत्ति 2:15)। हम मान लेते हैं कि उनका अनुवाद "सेवा करना और रखवाली करना" सही है, यद्यपि यह इब्रानी पाठ की एक अल्पसंख्यक व्याख्या है। [12]फिर भी:

1. उत्पत्ति 2 यह नहीं कहता कि वाटिका की रखवाली केवल आदम का कार्य था। इसके विपरीत, इस कार्य में स्त्री को उसकी सहायक या "उसके अनुरूप एक साथी" होना था (उत्पत्ति 2:18; तुलना कीजिए 1:28)।

2. बाइबल की भाषा में "सहायक" ('ēzer) के लिए प्रयुक्त शब्द, जो स्त्री पर लागू किया गया है, "रक्षक" या "छुड़ाने वाले" का भाव रखता प्रतीत होता है। इस शब्द के हर दूसरे उपयोग में संदर्भ दिखाता है कि सहायता का यह कार्य रक्षा या छुटकारे से संबंधित है, अक्सर इस्राएल के लिए परमेश्वर की सहायता से।[13]

3. वाटिका की रखवाली परमेश्वर के लोगों की रखवाली नहीं है।[14]

दूसरा, कुलपिता। विल्सन पवित्र शास्त्र का ऐसा कोई स्थान नहीं बताते जिसमें परमेश्वर सब कुलपिताओं को परमेश्वर के लोगों की रक्षा का कार्य देता हो। यदि उनका आशय इस तथ्य पर निर्भर रहना है कि उनमें से कुछ ने व्यवहार में कभी-कभी ऐसा किया, तो हम भी उन स्त्रियों के उदाहरण दे सकते हैं जो परमेश्वर के लोगों की रक्षा करती हैं:

अबीगैल (Abigail) अपने पति और अपने घराने के पुरुषों को हिंसक मृत्यु से बचाती है (1 शमूएल 25)।

राहाब (Rahab) पुरुष भेदियों की रक्षा करती है (यहोशू 2)।

एक बेनाम स्त्री तेबेस (Thebez) के लोगों को जलकर मरने से बचाती है (न्यायियों 9:50-57)। वह एक विशेष रूप से रोचक उदाहरण है। वह रक्षा के लिए युद्ध के एक कार्य में (वह घेराबंदी करने वाले राजा अबीमेलेक को घातक रूप से घायल करती है) शक्ति का एक काम करती है (वह चक्की का एक पाट उठाती है), बुराई को पराजित

करने की परमेश्वर की योजना के भाग के रूप में (पद 56)। परन्तु चूँकि अबीमेलेक के लिए किसी स्त्री के हाथ से मारा जाना सामाजिक रूप से स्वीकार्य नहीं है, इसलिए वह अपने हथियार ढोने वाले को आज्ञा देता है कि वह अपनी तलवार खींचकर उसे मार डाले। यह दिखाता है कि अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए किसी स्त्री को रक्षा या अगुवाई के लिए परमेश्वर द्वारा नियुक्त किया जाना उस संस्कृति के पितृसत्तात्मक सामाजिक मानदंडों का कैसे उल्लंघन करता है।

आबेल-बेत्माका (Abel Beth Maakah) की बुद्धिमान स्त्री अपने नगर के पुरुषों और स्त्रियों की एक आक्रमण-कारी सेना से रक्षा करती है (2 शमूएल 20)।

एस्तेर यहूदियों को एक नरसंहार से बचाती है (एस्तेर 2:19 - 9:19)।

नीतिवचन 31:10-31 की सामर्थी स्त्री अपने परिवार और अपने घराने की, परन्तु कंगालों और ज़रूरतमंदों की भी, रक्षा करती है। उसका वर्णन एक आदर्श के रूप में किया गया है, परन्तु इसका निहितार्थ यह है कि वर्णित गुण वा-स्तविक स्त्रियों में पाए जाते हैं, यद्यपि सब एक ही व्यक्ति में नहीं।[15]

तीसरा: नया यरूशलेम। विल्सन लिखते हैं:

> बाइबल इस बात के साथ समाप्त होती है कि एक स्त्रीलिंग नगर – जिसमें परमेश्वर के सब लोग शामिल हैं, चाहे हमारा लिंग कुछ भी हो – एक पुरुष उद्धारकर्ता द्वारा बचाया जाता है और अंततः उसके साथ ब्याहा जाता है, और नगर की दीवारों और उसकी नींवों के नाम पुरुष प्रेरितों और पुरुष कुलपिताओं के नाम पर रखे गए हैं।

यह स्पष्ट नहीं है कि विल्सन नए यरूशलेम को अपनी धारणा का प्रमाण क्यों मानते हैं। यूहन्ना के दर्शन में बात कु-लपिताओं या पुरुष प्रेरितों की नहीं है जो परमेश्वर के लोगों की रक्षा करते हों:

- प्रकाशितवाक्य 21:12 में फाटकों (न कि दीवारों) पर इस्राएल के पुत्रों के बारह गोत्रों के नाम लिखे हैं। फाटक प्रवेश-द्वार होते हैं। ये नाम बताते हैं कि कौन प्रवेश कर सकता है, अर्थात परमेश्वर के सब लोग (देखिए यहेज-केल 48:30-35; प्रकाशितवाक्य 7:4, 9)। फाटक रक्षा के लिए नहीं हैं: वे कभी बंद नहीं होते (21:25)।
- प्रकाशितवाक्य 21:14 में नगर की दीवार की बारह नींवें हैं, जिन पर "मेम्ने के बारह प्रेरितों के बारह नाम" लिखे हैं। "मेम्ने के प्रेरित" उपाधि यीशु के विषय में प्रेरितीय संदेश के द्वारा कलीसिया की स्थापना की ओर सं-केत करती है – उस यीशु के विषय में, जिसने "अपने लहू के द्वारा हमें हमारे पापों से छुड़ाया है" (प्रकाशितवा-क्य 1:5)। यहाँ बात रक्षा की नहीं है।[16]

परमेश्वर ने स्त्रियों को पुरुषों के साथ मिलकर प्रभुता करने की आज्ञा दी (उत्पत्ति 1:28) और, जैसा प्रतीत होता है, पुरुषों के साथ मिलकर रक्षा करने की भी (उत्पत्ति 2:18)। इसलिए उत्पत्ति 3 में मनुष्य की अवज्ञा के नकारात्मक परिणाम ("वह तुझ पर प्रभुता करेगा" – 3:16) के बाद भी हम यह अपेक्षा कर सकते हैं कि बाइबल के इतिहास में इस प्रभुता करने वाले और रक्षा करने वाले व्यवहार के कुछ प्रमाण मिलें। और ठीक यही हमें मिलता है। ऊपर दिए गए उदाहरण देखिए, मरियम से लेकर नीतिवचन 31 की सामर्थी स्त्री तक।

बाइबलीय धर्मविज्ञान

बाइबल को सही ढंग से समझने के लिए दो विपरीत युगों के विषय में नए नियम की धारणा को ध्यान में रखना आवश्यक है।

एक है वर्तमान बुरा युग, जिससे यीशु ने हमें बचाया है, और दूसरा है आने वाला युग, जिसका आरंभ यीशु ने किया है। आने वाला युग भविष्य के पुनरुत्थान पर और नई सृष्टि में सब वस्तुओं की पुनर्स्थापना पर पूरी तरह वास्तविकता बनेगा। इस बीच हम युगों के आपस में मिलने के काल में, "अभी, परन्तु अभी नहीं" में, जी रहे हैं। विचार की यह धारा पवित्र शास्त्र के अनेक स्थानों में स्पष्ट दिखाई देती है।[17]

आने वाले युग की पूर्णता अदन की ओर लौटना नहीं, बल्कि एक नया और भिन्न भविष्य है, जिसका प्रतीक एक वाटिका नहीं, बल्कि एक नगर है (प्रकाशितवाक्य 21:1-22:5)। इसलिए उत्पत्ति 2:24 के विपरीत, पुनरुत्थान में लोग न ब्याह करेंगे और न ब्याहे जाएँगे (मत्ती 22:30)। संतान उत्पन्न करना आवश्यक नहीं होगा। नई सृष्टि हर कुल, जाति, लोग और भाषा में से एक ऐसी बड़ी भीड़ से भरी होगी जिसे कोई गिन नहीं सकता (प्रकाशितवाक्य 7:9; 19:6-7)।

निश्चय ही विल्सन यह सब जानते हैं। अपने लेख के बिल्कुल आरंभ में वे नई सृष्टि के संबंध में लिखते हैं:

> यह आश्चर्य की बात नहीं कि स्वर्ग और पृथ्वी के बीच के भेद का मिट जाना पुरुष और स्त्री के बीच के भेद के मिट जाने से जुड़ा है।

परन्तु जब वे अपना तर्क आगे बढ़ाते हैं, तो बाइबलीय ढाँचा भुला दिया जाता है। **वे ऐसे तर्क करते हैं मानो पहली सृष्टि और नई सृष्टि के बीच, या पुरानी और नई वाचा के बीच कोई आवश्यक अंतर ही न हो। वे उचित ही कहते हैं: "मसीहियों को इस युग में पुरुष और स्त्री की पूरकता को व्यक्त करने के लिए बुलाया गया है", परन्तु वे इस बात पर ध्यान देने से चूक जाते हैं कि यह बुलाहट उस स्पष्ट बुलाहट के द्वारा कैसे सीमित और परिभाषित होती है कि इस वर्तमान जीवन में आने वाले युग के नए जीवन को व्यक्त किया जाए।**

नए नियम के संदर्भ के प्रति निष्ठावान ढंग से सोचने में उनकी चूक लेवीय याजकों के विषय में उनकी टिप्पणियों में स्पष्ट दिखाई देती है:

> लेवीय याजक, जिन्हें पवित्रस्थान की, और इस प्रकार पूरी इस्राएल जाति की, रक्षा का दायित्व सौंपा गया है, सब के सब पुरुष हैं, और वह भी हिंसा के पुरुष – वे अपना दिन पशुओं को मारने में बिताते हैं, और सबसे पहले याजकीय सेवा के लिए इसलिए अभिषिक्त किए जाते हैं क्योंकि उनमें यहोवा के लिए इतनी जलन थी कि उन्होंने अपने ही इस्राएली देशवासियों को मार डाला (निर्गमन 32:25-29)।

यह बात कलीसियाओं के लिए पुरुष प्राचीनों का समर्थन करने के लिए कही जाती है! **परन्तु यह नई वाचा के जीवन से कोसों दूर है।** हम एक ऐसे उद्धारकर्ता के पीछे चलते हैं जो हमें सिखाता है कि हम अपने हथियार रख दें, अपने शत्रुओं से प्रेम करें, अपने सताने वालों के लिए प्रार्थना करें, दूसरा गाल भी फेर दें, पलटकर वार न करें, बुराई को भलाई से जीतें, विरोधियों को नम्रता से सुधारें और पापियों को भटकने से लौटा लाएँ।[18] नए नियम में किसी भी विश्वासी को विश्वासी होने के नाते दूसरों के विरुद्ध हिंसा का उपयोग करने के लिए नहीं बुलाया गया है।[19] हमारी लड़ाई के हथियार आत्मिक हैं, संसार के हथियार नहीं (2 कुरिन्थियों 10:3-5)। पौलुस की "याजकीय सेवा" मार डालने में नहीं, बल्कि जीवन के विषय में परमेश्वर के शुभ समाचार के प्रचार में है (रोमियों 15:16)। यीशु के सब अनुयायियों को, पुरुषों और स्त्रियों दोनों को, यह बुलाहट दी गई है कि वे उस आत्मिक युद्ध के लिए आत्मिक हथियारों से सुसज्जित हों, जो लहू और मांस के विरुद्ध नहीं है (इफिसियों 6:10-18)।[20]

बाइबलीय धर्मविज्ञान के संदर्भ में देखें, तो लेवीय याजकपद का अर्थ विल्सन के निष्कर्ष के बिल्कुल विपरीत है। पुरानी वाचा का याजकपद हमारे महान महायाजक यीशु मसीह की सेवा का पूर्व-संकेत था, जिसमें सब विश्वासी, पु-

रुष भी और स्त्रियाँ भी, याजक बन जाते हैं (इब्रानियों 2-10; 1 पतरस 2:9; प्रकाशितवाक्य 1:6; 5:10)। यदि लेवीय याजकपद को परमेश्वर के लोगों की अगुवाई और रक्षा के लिए एक शिक्षा के रूप में देखा जाए, तो शिक्षा यह है कि नई वाचा के अधीन पुरुष और स्त्रियाँ दोनों इन कार्यों के लिए बुलाए गए हैं।[21]

पहली सृष्टि वाला विल्सन का तर्क यहाँ बस अप्रासंगिक है। मसीही सेवकाई को समझने के लिए हमें इस पर बहस करने की आवश्यकता नहीं कि पुरुष स्त्रियों से किस हद तक भिन्न ढंग से "बने हुए" ("wired") हैं। निस्संदेह पुरुषों में सामान्यतः स्त्रियों की तुलना में अधिक मांसपेशीय बल होता है।[22] **परन्तु मांसपेशीय बल जैसी शारीरिक विशेषताएँ कलीसिया की अगुवाई की योग्यता नहीं हैं।** प्राचीन होने के लिए मसीह में नए जीवन को बढ़ावा देने, उसका पोषण करने और उसकी रक्षा करने के लिए आत्मिक चरित्र-गुणों और वरदानों की आवश्यकता होती है।

यही विचार-ढाँचा (पुरानी वाचा/नई वाचा, वर्तमान युग/आने वाला युग, पहली सृष्टि/नई सृष्टि) पौलुस को यह स्वतंत्रता देता है कि वह गलातियों 3:28 ("न नर और नारी") में उत्पत्ति 1:27 ("नर और नारी") का सीधे खंडन करे। अपनी पत्री में उसके सामने उस पहली सृष्टि के, जो अवज्ञा से क्षतिग्रस्त हुई, और उस नई सृष्टि के बीच का विरोध है, जो यीशु मसीह के द्वारा आरंभ हुई है (गलातियों 1:4; 6:15)। मसीह में नई सृष्टि में पुरुष और स्त्री का वह महत्व नहीं रहा जो पहले था। जैसे मसीह में यहूदियों और अन्यजातियों के बीच के भेद के मिट जाने के (यद्यपि वह शारीरिक रूप से बना रहा) परमेश्वर के नए परिवार में व्यवहार पर परिणाम हुए (देखिए गलातियों 2:11-21; 6:15-16), वैसे ही मसीह में पुरुष और स्त्री के बीच के भेद के मिट जाने के (यद्यपि वह शारीरिक रूप से बना रहा) भी व्यवहार पर परिणाम हुए: स्त्रियाँ सुसमाचार में पूर्ण सहकर्मी बन गईं।

मसीह में एक नया युग आरंभ हुआ है। उसकी झलक यीशु के कार्य में मिली, और क्रूस पर मृत्यु पर विजय तथा यीशु के एक ऐसे नए जीवन में जी उठने के द्वारा, जिसमें वह फिर कभी नहीं मरेगा, उसका निर्णायक आरंभ हुआ। यह नया जीवन पवित्र आत्मा के वरदान के द्वारा उन लोगों के साथ बाँटा जाता है जो उसके पीछे चलते हैं। इसीलिए पिन्तेकुस्त के दिन पतरस आने वाले युग के विषय में योएल की भविष्यद्वाणी को उद्धृत करता है (प्रेरितों के काम 2:17-18):

> "परमेश्वर कहता है, कि अंतिम दिनों में ऐसा होगा कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उंडेलूँगा, और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियाँ भविष्यद्वाणी करेंगी, और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे पुरनिए स्वप्न देखेंगे। और मैं अपने दासों और अपनी दासियों पर भी उन दिनों में अपना आत्मा उंडेलूँगा, और वे भविष्यद्वाणी करेंगे।

आत्मा के नए जीवन में पुराने सामाजिक भेदों पर ध्यान नहीं दिया जाता। आत्मा सबको दिया गया है। जैसा यीशु ने कहा: "भविष्यद्वक्ताओं के लेखों में यह लिखा है कि वे सब परमेश्वर की ओर से सिखाए हुए होंगे" (यूहन्ना 6:45, यशायाह 54:13 का हवाला देते हुए; यिर्मयाह 31:31-34 भी देखिए)।

आत्मिक वरदान – अगुवाई और शिक्षा के वरदान भी – आत्मा के द्वारा परमेश्वर के राज्य के युग के आरंभ से जुड़े हैं और इसलिए लिंग का भेद किए बिना दिए जाते हैं:

- प्रेरितों के काम 2 में स्त्रियाँ भविष्यद्वाणी करेंगी (पद 17-18), और यह स्पष्ट है कि स्त्रियाँ वास्तव में उन 120 लोगों के समूह में थीं जिन्होंने आत्मा पाया। भविष्यद्वाणी करना अगुवाई का एक रूप है।
- रोमियों 12:3-8 में "हर एक" को बाँटे गए वरदानों में भविष्यद्वाणी, शिक्षा और अगुवाई शामिल हैं।
- 1 कुरिन्थियों 12 में "हर एक" (पद 7) को बाँटे गए वरदानों में बुद्धि की बात (पद 8), प्रेरित, भविष्यद्वक्ता और शिक्षक (पद 28) शामिल हैं।[23] यहाँ यह बहुत ध्यान देने योग्य है कि आत्मा "जिसे जो चाहता है, बाँट देता है",

और लिंगों के बीच किसी भेद का संकेत तक नहीं दिया गया।

- इफिसियों 4:11 में प्रेरितों, भविष्यद्वक्ताओं, सुसमाचार-प्रचारकों, चरवाहों और शिक्षकों के बीच लिंग-आधारित किसी भेद का कोई संकेत नहीं है (1 कुरिन्थियों 11 की भविष्यद्वक्तिनों, प्रेरितों के काम 18 में शिक्षा देने वाली प्रिस्किल्ला और रोमियों 16 में पौलुस की स्त्री सहकर्मियों पर भी ध्यान दीजिए)।
- कुलुस्सियों 3:16 में जो लोग चितावनी और शिक्षा के द्वारा कलीसिया की रक्षा करते हैं, वे पुरुष या स्त्रियाँ हो सकते हैं।
- 1 पतरस 4:10-11 में "हर एक" "परमेश्वर के वचन" सुना सकता है।

जब बाइबल को पूरकतावादी चश्मे के बिना पढ़ा जाता है, तो ये शिक्षाएँ इस पाठ की पुष्टि करती हैं कि लेवीय याजकपद का स्थान मसीह में सब विश्वासियों के याजकपद ने ले लिया है। **यदि पतरस और पौलुस यह मानते हैं कि कलीसिया की अगुवाई केवल पुरुषों के लिए आरक्षित है, तो फिर अगुवाई के वरदानों के विषय में उनकी शिक्षाएँ इस प्रतिबंध को स्पष्ट किए बिना पुरुषों और स्त्रियों दोनों को क्यों संबोधित करती हैं? आत्मिक वरदानों के विषय में शिक्षाएँ दिखाती हैं कि नई वाचा के अधीन कलीसिया की अगुवाई के संबंध में पुरुषों और स्त्रियों के बीच कोई अंतर नहीं है।**

इसका इस बात से भी खंडन नहीं होता कि यीशु ने अपने नए आंदोलन के संस्थापक प्रेरितों के रूप में बारह प्रेरितों को चुना। हाँ, वे सब यहूदी, स्वतंत्र और पुरुष थे। **परन्तु उसने उन्हें एक संक्रमण-काल में, नई वाचा के उद्घाटन से पहले, नियुक्त किया।** बारह कुलपिताओं के अनुरूप वे यीशु के अनुयायियों के रूप में परमेश्वर के लोगों की पुनर्स्थापना के प्रतीक थे।

यह निर्विवाद है कि पिन्तेकुस्त के बाद, आत्मा के युग में, बाद के कलीसिया-अगुवे अन्यजाति या दास हो सकते थे। यह तथ्य कि बारह यहूदी और स्वतंत्र थे, ऐसे अगुवों के विरुद्ध कोई तर्क नहीं है। इसी प्रकार बारह प्रेरितों का पुरुष होना इस बात के विरुद्ध कोई तर्क नहीं है कि बाद के अगुवे स्त्रियाँ हो सकती थीं।

बाइबलीय व्याख्या

अब हम विल्सन की इस धारणा की ओर मुड़ते हैं कि प्राचीनों का कार्य झुंड के चरवाहों के रूप में कलीसिया की रखवाली और रक्षा करना है, और साथ ही कलीसिया के प्राचीनों की योग्यताओं की पौलुस की सूची की उनकी व्याख्या की ओर। विल्सन का मत है कि ये दोनों बातें प्राचीनों के रूप में केवल पुरुषों की नियुक्ति निर्धारित करती हैं।

हम सहमत हैं कि नए नियम के अनुसार प्राचीनों के कार्यों में से एक कार्य झुंड के चरवाहों के रूप में कलीसिया की रखवाली और रक्षा करना है**। परन्तु न तो "चरवाहों" का रूपक और न ही उनके कार्य का स्वरूप इस ओर संकेत करता है कि प्राचीनों को पुरुष होना चाहिए।**

बाइबल में चरवाहे केवल पुरुष ही नहीं, बल्कि स्त्रियाँ भी हैं (उत्पत्ति 29:9; निर्गमन 2:16-17), इसलिए इस रूपक में लिंग से जुड़ी कोई शर्त निहित नहीं है।

जहाँ तक कार्य के स्वरूप की बात है, हम इस पर सहमत हैं कि स्त्रियों की तुलना में अधिक पुरुष शारीरिक लड़ाई के लिए उपयुक्त हैं। जब असली भेड़िये किसी असली झुंड पर आक्रमण करते हैं, तो शायद पुरुष चरवाहे स्त्री चरवाहों से अधिक उपयुक्त हों। परन्तु कलीसिया के प्राचीन-पद के कार्य के लिए इसकी कोई प्रासंगिकता

नहीं है, जिसके लिए ऐसे आत्मिक चरित्र-गुणों और वरदानों की आवश्यकता होती है जो पुरुषों और स्त्रियों में समान रूप से पाए जाते हैं।

यह तब बहुत स्पष्ट हो जाता है जब हम कलीसिया के प्राचीनों के लिए पौलुस द्वारा बताई गई योग्यताओं को देखते हैं।[24]

1 तीमुथियुस में पौलुस कुछ अयोग्य अगुवों के विषय में अपनी चिंता प्रकट करता है (1:7), जो झूठी शिक्षा देते हैं (1:3) और जिनका लिंग वह निर्दिष्ट नहीं करता (1:3, यूनानी tisin, tis से – कोई, कोई व्यक्ति)। 1 तीमुथियुस 2:15 में स्त्रियों का उल्लेख करने के तुरंत बाद पौलुस अगुवों की योग्यताओं की ओर मुड़ता है और एक लिंग-निरपेक्ष भूमिका से आरंभ करता है: "यदि कोई (tis) अध्यक्ष होना चाहता है ..." (3:1)।

एक ही प्रतीत होने वाले अपवाद को छोड़कर, पौलुस जिन सब व्यवहारों और कसौटियों को फिर गिनाता है, वे स्त्रियों पर भी लागू हो सकती हैं। चाहे सहज रूप से या जानबूझकर, पौलुस इस संदेश को रेखांकित करता है कि स्त्रियों में प्राचीन-पद के लिए आवश्यक योग्यताएँ हो सकती हैं। वह ऐसा इस प्रकार करता है कि 1 तीमुथियुस और तीतुस में दूसरे स्थानों पर स्त्रियों के बारे में लिखते समय वह वही या मिलते-जुलते यूनानी शब्दों और विचारों का उपयोग करता है। हम 1 तीमुथियुस की सूची को क्रम से देखते हैं:

- प्राचीन-पद एक भला काम है (3:1); पौलुस स्त्रियों से अपेक्षा करता है कि वे भला काम करें (5:10)।
- प्राचीनों को हर दोष से परे होना चाहिए (3:2); पौलुस स्त्रियों से अपेक्षा करता है कि वे निर्दोष हों (5:7)।
- प्राचीनों को संयमी होना चाहिए (3:2); पौलुस स्त्रियों से अपेक्षा करता है कि वे संयमी हों (3:11)।
- प्राचीनों को आत्म-संयमी होना चाहिए (3:2); स्त्रियों से पौलुस अपेक्षा करता है कि वे आत्म-संयमी हों (2:9,15)।
- प्राचीनों को शालीन होना चाहिए (3:2); स्त्रियों से पौलुस अपेक्षा करता है कि वे शालीन हों (2:9)।
- प्राचीनों को अतिथि-सत्कार करने वाला होना चाहिए (3:2); स्त्रियों से पौलुस अपेक्षा करता है कि वे अतिथि-सत्कार करने वाली हों (5:10)।
- प्राचीनों को सिखाने में निपुण होना चाहिए (3:2); स्त्रियों से पौलुस अपेक्षा करता है कि वे अच्छी बातें सिखाने वाली हों (तीतुस 2:3)।
- प्राचीनों को पियक्कड़ नहीं होना चाहिए (3:3); स्त्रियों से पौलुस अपेक्षा करता है कि वे मदिरा की आदी न हों (तीतुस 2:3)।
- प्राचीनों को धन का लोभी नहीं होना चाहिए (3:3); स्त्रियों से पौलुस अपेक्षा करता है कि वे सोने, मोतियों और बहुमूल्य वस्त्रों से अपने को न सँवारें (2:9)।
- प्राचीनों को अपने घरानों का अच्छा प्रबंध करना चाहिए (3:4); पौलुस स्त्रियों से अपेक्षा करता है कि वे अपने घरानों का प्रबंध करें (एक ऐसे शब्द के साथ, जो सशक्त शब्द despoteō का एक संयुक्त रूप है) (5:14)।
- प्राचीनों को अपने बच्चों को गरिमा के साथ अनुशासन में रखना चाहिए (3:4); पौलुस स्त्रियों से अपेक्षा करता है कि वे गरिमा दिखाएँ (3:11)।
- प्राचीन नए चेले नहीं होने चाहिए, जो घमंड के कारण दंड में पड़ें (3:6); पौलुस स्त्रियों से अपेक्षा करता है कि वे नम्र हों और दंड में न पड़ें (5:10,12)।

- प्राचीनों के विषय में बाहर वालों की अच्छी गवाही होनी चाहिए (3:7); स्त्रियों से पौलुस अपेक्षा करता है कि उनके विषय में दूसरों की अच्छी गवाही हो (5:7,10)।

पौलुस कुछ और गुण भी बताता है: कोमल, हिंसक नहीं (तुलना कीजिए 1:13!) और झगड़ालू नहीं (3:3)। यह निर्विवाद है कि ये गुण स्त्रियों में भी पाए जाते हैं। इस प्रकार पौलुस ने कम से कम सोलह ऐसे गुण या व्यवहार गिनाए हैं जो निश्चय ही पुरुषों और स्त्रियों दोनों में हो सकते हैं। ऐसा लगता है कि वह यह मानकर चलता है कि स्त्रियाँ इन योग्यताओं को पूरा कर सकती हैं।

पौलुस के विचार उन दूसरी टिप्पणियों से भी मेल खाते हैं जो वह परमेश्वर के लोगों की देखभाल के विषय में करता है और जिनमें स्त्री-संबंधी चित्र भी शामिल हैं। वह थिस्सलुनीकियों के बीच अपनी और सिलवानुस तथा तीमुथियुस की सेवकाई का वर्णन एक बच्चे के समान कोमल, अपने बच्चों का पालन-पोषण करने वाली एक दूध पिलाने वाली माता के समान करता है (1 थिस्सलुनीकियों 2:7)। गलातियों के बीच अपनी सेवकाई में वह नए नियम के सबसे आश्चर्यजनक रूपकों में से एक में स्वयं को एक गर्भवती स्त्री के समान देखता है, जो बच्चे को जन्म देती है (गलातियों 4:19)।

यह सब विल्सन की इस धारणा से कोसों दूर है कि प्राचीनों की योग्यताएँ एक विशिष्ट पुरुष रक्षा-कार्य का प्रावधान करती हैं और केवल पुरुषों को संबोधित हैं। पाठ लगातार दिखाते हैं कि यह पौलुस की सोच के अनुरूप नहीं है।

योग्यताओं की सूची में एकमात्र प्रतीत होने वाला अपवाद यह है कि प्राचीन को mias gunaikos andra होना चाहिए – अक्षरशः: एक "एक-पत्नी-पुरुष" (3:2)। यह मुहावरा यौन नैतिकता के मसीही मानक के अनुरूप होने से संबंधित है – व्यभिचारी नहीं और बहुविवाही नहीं। **संदर्भ के कारण और यूनानी भाषा जिस ढंग से काम करती है उसके कारण, इस मुहावरे को यहाँ सामान्य अर्थ में समझना चाहिए, अर्थात यह पुरुषों और स्त्रियों दोनों पर लागू होता है। (जब कोई यूनानी लेखक पुरुषों और स्त्रियों दोनों का उल्लेख करना चाहता है, तो पुरुषों के लिए प्रयुक्त संबंधित संज्ञा का उपयोग करना सामान्य बात है।)**[25]

प्राचीनों के लिए पौलुस की योग्यताओं का लिंग-निरपेक्ष शब्दांकन उन पाठकों को आश्चर्यचकित कर सकता है जो 1 तीमुथियुस 3 के अंग्रेज़ी संस्करणों से परिचित हैं, जिनमें परंपरागत रूप से बहुत-से पुल्लिंग सर्वनाम और विशेषण प्रयुक्त होते हैं जो पौलुस की यूनानी में नहीं हैं। **परन्तु डगलस मू (Douglas Moo) और टॉम श्राइनर (Tom Schreiner) जैसे प्रमुख, अत्यंत योग्य पूरकतावादी विद्वान इस बात पर सहमत हैं कि योग्यताओं की सूची का शब्दांकन स्त्रियों को बाहर नहीं करता।**[26] **यहाँ तक कि जॉन पाइपर और वेन ग्रूडम भी इसे स्वीकार करते प्रतीत होते हैं।**[27]

यद्यपि हम पौलुस की सूची को सामान्यतः "योग्यताएँ" कहते हैं, फिर भी लगभग सब विद्वान और कलीसियाई अधिकारी उसे उचित ही एक नियम के बजाय एक मार्गदर्शक संकेत के रूप में समझते हैं। यह प्राचीन-पद की योग्यताओं की क़ानूनी परिभाषा वाली कोई कलीसियाई नियमावली नहीं है; यह एक घनिष्ठ सहकर्मी को लिखे गए पत्र में दी गई सलाह है। हमें ऐसे किसी बड़े कलीसियाई समूह की जानकारी नहीं है जो प्राचीनों से यह माँग करता हो कि वे विवाहित हों (पद 2 का शाब्दिक पठन) या उनके कम से कम दो बच्चे हों (पद 4)। यदि इसे नियम के रूप में अभिप्रेत किया गया होता, तो स्वयं पौलुस, और यहाँ तक कि प्रधान चरवाहा, प्रभु यीशु, भी कलीसिया के प्राचीन होने के योग्य न ठहरते।

तो सूची की इस प्रकार व्याख्या करने के विल्सन के कारण क्या हैं कि प्राचीन-पद पुरुषों तक सीमित है? वे सात बिंदु प्रस्तुत करते हैं।

पहला, वे कहते हैं कि प्राचीनों के विषय में "यह मानकर चला गया है कि वे पुरुष हैं"। यदि उनका अर्थ यह है कि पौलुस यह मानकर चलता है कि बहुत-से प्राचीन पुरुष होंगे, तो हम उनसे सहमत हैं। परन्तु यदि उनका अर्थ यह है कि पौलुस यह मानकर चलता है कि प्राचीन केवल पुरुष होंगे, तो हमारे विचार में वे भूल कर रहे हैं। **सूची में ऐसी कोई धारणा नहीं है, क्योंकि इसका कोई ठोस कारण नहीं है कि** mias gunaikos andra **को इस प्रकार पढ़ा जाए कि वह केवल पुरुषों से संबंधित हो।** परन्तु यदि विल्सन का पहला बिंदु सही भी हो, तो भी इससे उनके पक्ष की पुष्टि नहीं होती, क्योंकि बहुतों के विषय में की गई कोई पूर्वधारणा कोई शर्त नहीं होती।

दूसरा, वे कहते हैं कि प्राचीन को "एक ही पत्नी का पति" होना चाहिए। यह mias gunaikos andra मुहावरे की ओर संकेत है। विल्सन यह नहीं समझाते कि संदर्भ में इस शब्द को सामान्य अर्थ में समझना वे अनुचित क्यों मानते हैं। **विल्सन का पक्ष इस बात से टकराता है कि पौलुस (1) अपनी सूची का आरंभ लिंग-निरपेक्ष ढंग से करता है, (2) सत्रह गुण या व्यवहार गिनाता है, जिनमें से (पौलुस की समझ के अनुसार) सोलह निश्चय ही स्त्रियों में पाए जाते हैं, और (3) सत्रहवें को ऐसे ढंग से व्यक्त करता है जिसे (यूनानी की संरचना के कारण) लिंग-निरपेक्ष रूप से पढ़ा जा सकता है, फिर भी (4) यह चाहता है कि सत्रहवें को एक नियमात्मक शर्त के रूप में समझा जाए कि प्राचीनों को पुरुष होना चाहिए। यह विश्वसनीय नहीं है।**

यह इस समझ के भी विपरीत है कि सूची नियम के बजाय मार्गदर्शक संकेत है। विल्सन के दृष्टिकोण का निहितार्थ यह है कि जिन लोगों ने जॉन स्टॉट (John Stott) को कलीसिया में पास्टर के रूप में सेवा करने दी, वे परमेश्वर के वचन की अवज्ञा कर रहे थे, क्योंकि स्टॉट अविवाहित थे।

तीसरा, विल्सन कहते हैं:

> कलीसिया एक परिवार है, जिसमें पिता भी हैं और माताएँ भी, और जिसे दोनों की सख़्त आवश्यकता है (उदाहरण के लिए 5:1-2), और यह इस बात का एक सशक्त संकेत है कि पौलुस अध्यक्षों को पिताओं के रूप में देखता है।

परन्तु इस तर्क का तर्कशास्त्र समझना कठिन है। यदि कलीसिया एक ऐसा परिवार है जिसे पिताओं और माताओं दोनों की आवश्यकता है, तो इसका अर्थ यह होगा कि पुरुषों और स्त्रियों दोनों को प्राचीन होना चाहिए।

चौथा, उनका मत है कि घराने का अच्छा प्रबंध करने और बच्चों को अधीनता में रखने की माँग (3:4) "एक सशक्त संकेत" है कि पौलुस प्राचीनों को पुरुष मानता है। परन्तु चूँकि स्त्रियाँ घरानों का प्रबंध करती हैं और बच्चों का पालन-पोषण करती हैं,[28] इसलिए विल्सन के इस विश्वास का आधार स्पष्ट नहीं है।

पाँचवाँ, वे सिखाने की योग्यता की माँग (3:2) से तर्क देते हैं:

> पौलुस ने अभी-अभी स्त्रियों को इससे मना किया है (2:12; यह तथ्य कि इस पर बहुत-सी चर्चाएँ हैं कि उसका ठीक-ठीक अर्थ क्या था, हमें इस स्पष्ट संबंध को देखने से नहीं रोकना चाहिए)।

परन्तु ये अनेक बहसें गंभीर प्रश्न उठाती हैं, जिन्हें इतनी आसानी से टाला नहीं जा सकता। जो विद्वान पूरकतावादी नहीं हैं, वे 2:12 को इस प्रकार समझते हैं कि वह कुछ स्त्रियों द्वारा दी जाने वाली झूठी शिक्षा का निषेध करता है। 1 तीमुथियुस 2:12 के पूरकतावादी अनुवादों और व्याख्याओं में वास्तविक कठिनाइयाँ हैं, जिनमें ये भी शामिल हैं:

चूँकि पौलुस की पत्री का उद्देश्य झूठी शिक्षा से लड़ना है (1:3 से आगे), तो 2:12 को स्त्रियों द्वारा सही शिक्षा के निषेध के रूप में क्यों पढ़ा जाए, न कि स्त्रियों द्वारा झूठी शिक्षा के निषेध के रूप में?

यदि पौलुस कोई सामान्य नियम स्थापित करना चाहता है, तो वह ouk epitrepō – "मैं अनुमति नहीं देता" – क्यों कहता है? पूरी बाइबल में कहीं भी ऐसा कोई उदाहरण नहीं है कि इस अभिव्यक्ति का उपयोग कोई सामान्य नियम स्थापित करने के लिए किया गया हो।

यदि 2:12 में पौलुस का विषय कलीसिया में वैध पास्टरीय अधिकार का उपयोग है, तो वह अधिकार के प्रयोग के लिए सामान्य शब्दों में से किसी एक के बजाय authenteō क्रिया का उपयोग क्यों करता है?

पूरकतावादी authenteō का अनुवाद "अधिकार रखना" या "अधिकार चलाना" करते हैं, परन्तु वे पौलुस के समय से पहले, पौलुस के समय में, या उसके लगभग 300 वर्ष बाद तक, इस अर्थ का एक भी स्पष्ट उदाहरण प्रस्तुत नहीं कर सकते।[29]

परन्तु शिक्षा देने के विषय में विल्सन का तर्क पूरकतावादी पठन में भी असफल हो जाता है, क्योंकि पौलुस 5:17 में स्पष्ट करता है कि सब प्राचीन शिक्षा नहीं देते।[30]

छठा, वे 3:11 का हवाला देते हैं, जहाँ सेवकों (डीकनों) की योग्यताओं के बीच, जो 3:8 में आरंभ होती हैं और 3:12 में जारी रहती हैं, स्पष्ट रूप से स्त्रियों का उल्लेख है। 3:11 के आधार पर विल्सन इसे "लगभग असंभव" मानते हैं कि पौलुस ने स्त्रियों को प्राचीनों के रूप में सोचा हो। परन्तु इससे वे अतिशयोक्ति करते हैं। टीकाकार 3:11 के अभिप्राय के विषय में निश्चित नहीं हैं। अंग्रेज़ी अनुवाद इस पर एकमत नहीं हैं कि 3:11 में पौलुस "स्त्रियों" की, "डीकनों की पत्नियों" की, या "सेविकाओं (डीकन स्त्रियों)" की बात करता है। टीकाकारों ने पाँच भिन्न व्याख्याएँ प्रस्तावित की हैं।

एक सरल पठन यह है कि पौलुस 2:15 में स्त्रियों की बात करता है और फिर प्राचीनों की योग्यताओं की अपनी सूची एक लिंग-निरपेक्ष भूमिका के साथ आरंभ करता है (3:1), जिससे पाठकों के लिए पहले से स्पष्ट है कि पहली सूची पुरुषों और स्त्रियों दोनों के लिए अभिप्रेत है। परन्तु डीकनों की सूची सीधे पुल्लिंग शब्द diakonous से आरंभ होती है, इसलिए लिखवाते समय उसे ध्यान आता है कि उसे एक संकेत देना होगा, यह दिखाने के लिए कि उसके मन में केवल पुरुष हैं या स्त्रियाँ भी। यह संकेत वह 3:11 में देता है: वह स्त्री और पुरुष दोनों डीकनों की बात करता है। एंड्रयू बार्टलेट इस सरल पठन को प्राथमिकता देते हैं। टेरन विलियम्स दूसरी व्याख्याओं को प्राथमिकता देते हैं, जो भी विल्सन के दृष्टिकोण से मेल नहीं खातीं।[31]

इसके अतिरिक्त हम पहले ही देख चुके हैं कि विल्सन ने प्राचीनों की योग्यताओं की सूची की सामान्य भाषा पर, स्त्रियों के लिए उपयुक्त उसके गुणों और व्यवहारों के साथ, ध्यान नहीं दिया है। इसलिए 3:11 के अर्थ पर विल्सन के निर्णय का वज़न कम है। **और यदि पौलुस सचमुच सब कलीसियाओं के लिए यह नियम स्थापित करना चाहता है कि केवल पुरुष ही प्राचीन हो सकते हैं, तो वह कहीं भी इसे इतना स्पष्ट और असंदिग्ध रूप से क्यों नहीं कहता? वह अपने पाठकों पर यह क्यों छोड़ देता है कि वे डीकनों के विषय में एक खंड से प्राचीनों के विषय में अनिश्चित निष्कर्ष निकालें?**

सातवाँ: विल्सन कहते हैं:

> समानतावादी व्याख्याकार भी अक्सर इस बात पर सहमत होते हैं कि ये शर्तें "अध्यक्ष को पति और पिता के रूप में प्रस्तुत करती हैं" (Towner), और कि "पौलुस अध्यक्ष का उल्लेख लगातार एक पुरुष के रूप में करता

> है" (Wright)। कम से कम इस पाठ में प्राचीन-पद लिंग-निरपेक्ष नहीं है।

परन्तु यह कथन अच्छे शोध पर आधारित नहीं है।

फिलिप टाउनर (Philip Towner) का उद्धरण तीमुथियुस और तीतुस की पत्रियों पर टाउनर की टीका से लिया गया है। यह mias gunaikos andra के अर्थ पर उनकी चर्चा का भाग है। विल्सन (Wilson) ने टाउनर की बात को ठीक से प्रस्तुत नहीं किया। टाउनर यह नहीं लिखते कि योग्यताएँ अध्यक्ष को पति और पिता के रूप में दिखाती हैं। वे वास्तव में यह लिखते हैं कि "इस संहिता की घरेलू मान्यताएँ ... अध्यक्ष को पति और पिता के रूप में दिखाती हैं" (ज़ोर हमारा)। इससे हम फिर मान्यता वाले तर्क पर लौट आते हैं। इस तर्क पर हम विल्सन और टाउनर दोनों से असहमत हैं, पर वह हर हाल में बेअसर रहता है, क्योंकि कोई मान्यता कोई शर्त नहीं होती।

हमारी राय में टॉम राइट (Tom Wright) की टिप्पणी के अर्थ को विल्सन ने और भी अधिक भ्रामक ढंग से प्रस्तुत किया है। यह उद्धरण पादरीय पत्रियों पर राइट की मनन-पुस्तक से है, जो "सबके लिए पौलुस" श्रृंखला में छपी है। विल्सन राइट की टिप्पणी को ऐसे प्रस्तुत करते हैं मानो वह इस विचार का समर्थन करती हो कि "प्राचीन का पद लिंग-निरपेक्ष नहीं" है, बल्कि केवल पुरुषों के लिए आरक्षित है। राइट का दृष्टिकोण ठीक इसके उलटा है। राइट यह कहते हैं:

> पौलुस बिशप का उल्लेख लगातार पुरुष के रूप में करता है। जब मैं नए नियम का बाकी भाग पढ़ता हूँ, तो मुझे लगता है कि इसका कारण अधिक यह है कि यूनानी व्याकरण सामान्यतः दोनों लिंगों के लिए एक साथ ऐसा ही रूप प्रयोग करता है, और कलीसिया के आरंभिक समय में अधिकतर कलीसियाओं के अगुवे शायद पुरुष थे। मैं इसे इस अर्थ में नहीं देखता कि यह स्त्रियों को इस विशेष सेवा और इस बुलाहट से बाहर रखता है।

पहली सदी की यूनानी भाषा की अपनी विशेषज्ञ समझ के कारण समानतावादी राइट भी, ठीक पूरकतावादी मू (Moo) और श्राइनर (Schreiner) की तरह, पौलुस की योग्यताओं की सूची में स्त्रियों का कोई बहिष्कार नहीं देखते।

तो पौलुस की सूची को इस तरह समझने के लिए कि वह स्त्रियों को प्राचीन के पद से बाहर रखती है, विल्सन के सात कारणों का क्या होता है? उनमें से एक भी ठोस नहीं है। इस बिंदु पर मू, श्राइनर और राइट सही हैं, और विल्सन ग़लत हैं।

सच्ची पूरकता

अब हमने विल्सन की केंद्रीय थीसिस की जाँच कर ली है: बाइबल के इतिहास के हर चरण में पुरुषों को ही परमेश्वर के लोगों की रखवाली और रक्षा करने का काम सौंपा गया है। हमने पाया कि यह थीसिस बाइबल के इतिहास के बारे में ग़लत है, बाइबलीय धर्मविज्ञान के विरुद्ध है और अपनी बाइबलीय व्याख्या में असंगत है। विल्सन का लेख पूरकतावाद के लिए बाइबलीय आधार देने में विफल रहता है।

विल्सन के पक्ष की वास्तविकता यह है कि वह पुरुषों और स्त्रियों के सुंदर अंतर को नष्ट कर देता है। वह ऐसा इसलिए करता है क्योंकि वह परमेश्वर के स्वरूप में सृजे गए पुरुषों और स्त्रियों की पूरी बाइबलीय पूरकता का इनकार करता है। वह पुरुषों पर तो रोक नहीं लगाता, पर स्त्रियों पर ऐसी रोक लगाता है जो परमेश्वर का अभिप्राय नहीं है। वह कलीसिया की अगुवाई में स्त्रियों के योगदान को रोक देता है।

इससे कलीसिया उन वरदानों और संसाधनों से वंचित हो जाती है जो परमेश्वर ने उसे दिए हैं। पूरकतावादी वेन ग्रूडम (Wayne Grudem) ने ठीक ही कहा है:

> परमेश्वर ने स्त्रियों को बहुत अंतर्दृष्टि और बुद्धि दी है ... और ... कलीसिया के जो भी अगुवे स्त्रियों की बुद्धि का उपयोग करने से चूकते हैं, वे सचमुच मूर्खता करते हैं।[32]

पर विल्सन के लेख में और भी बातें ग़लत हैं।

लैंगिक अंतर पर अत्यधिक ज़ोर

जिस तरह विल्सन बाइबल के इतिहास को समझते हैं, उसमें स्त्रियाँ केवल स्त्रियों के रूप में सेवा करती हैं, ऐसे ढंग से जो पुरुषों का पूरक हो। वे लगभग 26 उदाहरण गिनाते हैं और कहते हैं:

> इनमें से हर एक मामले में संबंधित स्त्रियाँ परमेश्वर के लोगों की सेवा विशेष रूप से स्त्रियों के रूप में करती हैं।

वे समझाते हैं:

> इन उदाहरणों की शक्ति इस तथ्य में है कि स्त्रियाँ हर प्रकार के ऐसे काम कर सकती हैं जो पुरुष नहीं कर सकते या नहीं करते, और इसका उलटा भी।

यीशु की माता मरियम जैसे मामले में यह आसानी से समझ में आता है। केवल एक स्त्री ही माता हो सकती है। पर उनके कई अन्य उदाहरणों को निःसंकोच अजीब कहा जा सकता है। उदाहरण के लिए:

- दबोरा इस्राएल की अगुवाई करती है; पर एक पुरुष भी इस्राएल की अगुवाई कर सकता था, और बहुतों ने की।
- हन्ना और मरियम भजन और गीत रचती हैं जो पवित्र शास्त्र में आते हैं, पर दाऊद और आसाप भी।
- हुल्दा और फिलिप्पुस की बेटियाँ भविष्यद्वाणी करती हैं; पर बहुत-से पुरुष भी ऐसा करते हैं।
- खलोए एक कलीसिया की अगुवाई करती है, पर पुरुष भी ऐसा करते हैं।
- लुदिया एक व्यापार चलाती है; पर एक पुरुष भी व्यापार चला सकता है, और बहुत-से चलाते हैं।
- यूओदिया और सुन्तुखे सुसमाचार में पौलुस की सहकर्मी हैं; पर बहुत-से पुरुष भी हैं - पौलुस तीमुथियुस, अपुल्लोस, सिलवानुस (सीलास) और तीतुस का वर्णन करने के लिए भी वही यूनानी शब्द (sunergos) प्रयोग करता है।
- यूनिया एक प्रेरित है, पर बहुत-से पुरुष भी हैं।

इस्राएल की अगुवाई करना, गीत रचना, भविष्यद्वाणी करना, कलीसिया की अगुवाई करना, व्यापार चलाना, सुसमाचार में सहकर्मी होना और प्रेरित के रूप में काम करना - ये पिता या माता के काम जैसे लिंग-विशेष काम नहीं हैं।

विल्सन हर मानवीय गतिविधि को लैंगिक रूप से विभेदित मानने के अपने विचार में इतने डूबे हुए हैं कि वे 1 तीमुथियुस 5:1-2 को ग़लत पढ़ते और ग़लत लागू करते हैं।

पौलुस तीमुथियुस को सलाह देता है: "किसी बूढ़े पुरुष को न डाँट, बल्कि उसे पिता जानकर समझा, और जवानों को भाई जानकर, बूढ़ी स्त्रियों को माता जानकर, और जवान स्त्रियों को पूरी पवित्रता से बहन जानकर।" (ESV)

विल्सन मानते हैं कि इस सलाह का संदर्भ "परमेश्वर के परिवार में लोगों के साथ व्यवहार" है। पर उनका मत है कि यह बात "कार्यस्थल पर" भी लागू होती है, और वे हमें सलाह देते हैं कि हम अपने सहकर्मियों से स्पष्ट रूप से पिता, माता, बहन या भाई के रूप में व्यवहार करें, न कि "लिंग-निरपेक्ष इकाइयों या लिंगहीन, एकरूप कामगारों" के रूप में।

स्त्री वकीलों या स्त्री वैज्ञानिकों को यह अजीब लगेगा यदि कोई मसीही वकील या वैज्ञानिक कार्यस्थल पर उनसे मुख्य रूप से माता या बहन के रूप में मिले, न कि मुख्य रूप से सहकर्मी के रूप में, जिसका लिंग उसके काम के लिए (अधिक से अधिक) थोड़ा ही महत्व रखता है। ऐसा लगता है कि विल्सन अपनी ही पहले वाली चेतावनी भूल गए हैं, जिसे वे उत्पत्ति 1:27 से निकालते हैं:

> पुरुष और स्त्री मिलकर परमेश्वर का स्वरूप धारण करते हैं, और हमारी पहचान हमारे लिंग की अपेक्षा हमारे मनुष्य होने से कहीं अधिक मौलिक रूप से निर्धारित होती है। हम पहले मनुष्य हैं, और उसके बाद ही पुरुष या स्त्री ...

यह चेतावनी सही संतुलन स्थापित करती है। एक स्त्री अगुवा या कर्मचारी मुख्य रूप से अगुवा या कर्मचारी के रूप में सेवा करती है और दूसरे स्थान पर स्त्री के रूप में। स्त्री होने के नाते वह शायद ऐसे गुणों और अंतर्दृष्टियों का मिश्रण लाती है जो किसी पुरुष से भिन्न हों। यह पूरकता का एक लाभ तो है, पर उसकी अगुवाई या उसके काम की मुख्य विशेषता नहीं।[33]

निष्कर्ष

पूरकतावाद में बहुत-से वरदानयुक्त बाइबल-शिक्षक हैं जो सामान्यतः परमेश्वर के वचन को सावधानी से सँभालते हैं। पर जब वे पुरुषों और स्त्रियों के बारे में सोचते हैं, तो ऐसा लगता है कि एक कोहरा पैदा हो जाता है जो उनके पढ़ने और सोचने को प्रभावित करता है।[34]

विल्सन अपने लेख का अंत इस टिप्पणी से करते हैं कि कलीसिया को एक परिवार के रूप में देखा जाना चाहिए। हम उनसे सहमत हैं, पर वे ग़लती से यह मान लेते हैं कि इससे अगुवाई को पुरुषों तक सीमित करना उचित ठहरता है:

> यह इनकार करना कि स्त्रियाँ [sic] प्राचीन हो सकती हैं, ऐसा सुनाई देता है मानो कोई इनकार कर रहा हो कि स्त्रियाँ किसी कंपनी की मुख्य कार्यकारी अधिकारी हो सकती हैं, पर वास्तव में यह इस इनकार के अधिक समान है कि स्त्रियाँ पिता हो सकती हैं और पुरुष माता हो सकते हैं।" [35]

अपने भाई के प्रति पूरे आदर के साथ, यह उलझा हुआ और बाइबल के विरुद्ध है।

यह उलझा हुआ इसलिए है क्योंकि यह पूरकता के वास्तविक उद्देश्य के विरुद्ध जाता है। विल्सन स्वयं कहते हैं:

> मसीही विश्वास में पुरुष और स्त्री मिलकर परमेश्वर का स्वरूप धारण करते हैं, और न तो पुरुष और न ही स्त्री दूसरे के बिना उसे पूरी तरह व्यक्त कर सकता है।

पुरुष और स्त्री समान भी हैं (परमेश्वर के स्वरूप में सृजे गए मनुष्य) और एक दूसरे से भिन्न भी (पुरुष और स्त्री के रूप में सृजे गए)। जहाँ तक वे समान हैं, पुरुष और स्त्री दोनों अच्छा चरित्र दिखा सकते हैं और उनमें आत्मिक अगुवाई के गुण हो सकते हैं। जहाँ तक वे भिन्न हैं, वे अगुवाई में भिन्न योगदान दे सकते हैं। यीशु स्वयं तो परमेश्वर

का सिद्ध स्वरूप था, पर कलीसिया के अगुवे यीशु नहीं हैं। व्यवहार में कलीसिया के अगुवों के द्वारा परमेश्वर के स्वरूप का पूरा प्रकटीकरण तब अधिक सहज होता है, जब वे पुरुष भी हों और स्त्री भी। सुंदर अंतर साझा अगुवाई में दिखाई देता है।[36]

यह बाइबल के विरुद्ध इसलिए है क्योंकि पवित्र शास्त्र कहीं भी "पिताओं" को कलीसियाओं के प्राचीनों के लिए रूपक के रूप में या उनके वर्णन के रूप में प्रयोग नहीं करता। कलीसिया को परिवार के रूप में दिखाने वाला बाइबलीय रूपक किसी सांसारिक पास्टर को परिवार के पिता के रूप में नहीं दिखाता, बल्कि परमेश्वर को पिता और परमेश्वर के लोगों को संतान के रूप में (यूहन्ना 1:12-13), यीशु को पहलौठा और विश्वासियों को उसके भाई-बहन के रूप में (रोमियों 8:29; इब्रानियों 1:5-6; 2:10-11)। हमारे अगुवे मसीह में हमारे बड़े भाई-बहन हैं। विश्वासी परमेश्वर का परिवार हैं, प्राचीनों का परिवार नहीं।

हमें एक बार फिर ज़ोर देना चाहिए कि यह धारणा कि स्त्रियाँ और पुरुष दोनों सेवा और अगुवाई करने में सक्षम हैं, यह अर्थ नहीं रखती कि स्त्रियाँ और पुरुष पूरी तरह एक-दूसरे की जगह ले सकते हैं और उनमें कोई अंतर नहीं है। यह विश्वास कि दोनों अगुवाई कर सकते हैं, लैंगिक पहचान की धर्मनिरपेक्ष विचारधाराओं में फिसल जाना नहीं है। इस हद तक हम विल्सन की उन बहुत-सी बातों से सहमत हैं जो वे अपने लेख के पहले भाग में सृष्टि में अंतरों के बारे में कहते हैं; पर दूसरे भाग में किया गया विकास, अर्थात् प्राचीन के पद की योग्यता के विषय में एक पूर्ण भेद करना, जैसा कि हमने दिखाया है, ग़लत है।

जो पूरकतावाद सुंदर अंतर को विकृत करता है, वह अब भी बहुत-सी कलीसियाओं और बहुत-से विश्वासियों को हानि पहुँचाता और सीमित करता है। वह बाइबल के अनुसार नहीं है। वह आवश्यक नहीं है। वह एक त्रासदी है। कोहरे को छँट जाने दीजिए। अब उसे पीछे छोड़ने का समय आ गया है।

लेखक:

Andrew Bartlett QC, Men and Women in Christ: Fresh Light from the Biblical Texts (IVP, 2019) के लेखक।

Dr. Ian Paul, स्वतंत्र लेखक, धर्मवैज्ञानिक और ब्लॉगर, सेंट निक्स चर्च (St. Nic's Church), नॉटिंघम, यू.के. में एसोसिएट मिनिस्टर, सेंट हिल्ड कॉलेज (St. Hild College), शेफ़ील्ड, यू.के. में अतिथि व्याख्याता, पहले सेंट जॉन्स कॉलेज (St. John's College), नॉटिंघम, यू.के. में अध्ययन-डीन और नए नियम के व्याख्याता।

इस आलोचना का समर्थन करते हैं:

Katia Adams, द टेबल बोस्टन चर्च (The Table Boston Church), अमेरिका की मुख्य पास्टर, Equal: What the Bible Says about Women, Men and Authority (David Cook, 2020) की लेखिका।

Simon Benham, केरिथ (Kerith) कलीसिया, ग्रेट ब्रिटेन के मुख्य पास्टर।

Terran Williams, How God Sees Women: The End of Patriarchy (परमेश्वर स्त्रियों को कैसे देखता है: पितृसत्ता का अंत) (Spiritual Bakery, 2022) के लेखक, सिग्नल चर्च (Signal Church), केप टाउन, दक्षिण अफ्रीका के पास्टर।

मूल: Ian Paul और Andrew Bartlett, "Spoiling the Beautiful Difference", psephizo.com, 24 जून 2022, https://www.psephizo.com/biblical-studies/spoiling-the-beautiful-difference/

टिप्पणियाँ

1. पूरकतावाद बाइबल-व्याख्या की एक प्रणाली है, जो 1970 और 1980 के दशकों में संयुक्त राज्य अमेरिका में विकसित की गई। इसने परिवार और कलीसिया में केवल पुरुषों की अगुवाई का समर्थन करने के लिए पुरुष और स्त्री की "भूमिकाओं" की समाजशास्त्रीय अवधारणा को बाइबल की व्याख्या में प्रविष्ट किया। यह अधिकांश ऐतिहासिक रिफ़ॉर्म्ड धारणाओं से इस बात में भिन्न है कि यह व्यापक समाज में केवल पुरुषों की अगुवाई की एकरूप माँग नहीं करता।
2. Denny Burk, "समानतावाद की ओर एक पड़ाव: Aimee Byrd की Recovering from Biblical Manhood & Womanhood पर एक टिप्पणी", 7 जुलाई 2020। यहाँ उपलब्ध: https://equip.sbts.edu/article/way-station-egalitarianism-review-essay-aimee-byrds-recovering-biblical-manhood-womanhood/
3. वे अपनी कहानी बताते हैं और पवित्र शास्त्र की व्याख्या करते हैं: Terran Williams, How God Sees Women: The End of Patriarchy (Spiritual Bakery, 2022) (www.terranwilliams.com पर या Amazon पर उपलब्ध)।
4. उनके प्रकाशित PhD शोध-प्रबंध की एक सकारात्मक समीक्षा यहाँ देखिए: https://www.psephizo.com/biblical-studies/does-god-discipline-those-whom-god-loves/ और उनकी उत्कृष्ट पुस्तक God of All Things के बारे में उनसे एक साक्षात्कार यहाँ: https://www.psephizo.com/reviews/what-can-the-material-world-teach-us-about-god/।
5. उनकी वेबसाइट Think Theology पर 20 नवंबर 2020 को प्रकाशित: https://thinktheology.co.uk/blog/article/beautiful_difference_the_complementarity_of_male_and_female इसे मामूली परिवर्तनों के साथ 20 मई 2021 को Gospel Coalition की वेबसाइट पर फिर से प्रकाशित किया गया: https://www.thegospelcoalition.org/article/beautiful-complementarity-male-female/
6. उदाहरण के लिए यह कथन कि पुरुष और स्त्रियाँ एक जैसे नहीं हैं और एक-दूसरे की जगह नहीं ले सकते। पहले भाग की प्रस्तुति यहाँ देखिए: https://www.psephizo.com/gender-2/beautiful-difference-the-complementarity-of-male-and-female/।
7. इस लेख को बहुत लंबा न होने देने के लिए हमारी चर्चा परिवार पर नहीं, बल्कि कलीसिया की अगुवाई पर केंद्रित है। हम ध्यान देते हैं कि विवाह और परिवार पर विल्सन की चर्चा विवाह और पुरुष तथा स्त्री के व्यक्तिगत संबंधों के विषय में नए नियम के सबसे लंबे खंड (1 कुरिन्थियों 7) को पूरी तरह अनदेखा कर देती है, जो एकमात्र स्थान है जहाँ पौलुस विवाह में अधिकार और निर्णय लेने के विषय में स्पष्ट रूप से शिक्षा देता है। यह खंड पूरकतावादियों के लिए कुछ असुविधाजनक है, क्योंकि यह संकेत करता है कि पति और पत्नी का अधिकार बराबर है और निर्णय आपसी सहमति से लिए जाने चाहिए (पद 4-5)। विस्तृत प्रस्तुति के लिए देखिए Andrew Bartlett, Men and Women in Christ: Fresh Light from the Biblical Texts (IVP, 2019), अध्याय 2।
8. मरियम, दबोरा और हुल्दा के बारे में और उनकी अगुवाई की भूमिका को छोटा दिखाने के पूरकतावादी प्रयासों के उत्तरों के बारे में अधिक जानकारी आपको Men and Women in Christ, 91-94 (अध्याय 5, "Women's leadership and authority in the Old Testament" के अंतर्गत) में मिलेगी।
9. अधिकांश व्याख्याकार ध्यान देते हैं कि प्रेरितों के काम 18:19-21 की यूनानी असामान्य है और एकसार नहीं है; स्वाभाविक पठन यह है कि प्रिस्किल्ला और अक्विला ने वहाँ की कलीसिया स्थापित की, परन्तु लूका उसके आरंभ के साथ पौलुस के घनिष्ठ संबंध का उल्लेख करने का ध्यान रखता है। देखिए Howard Marshall Acts (TNTC) 1980, 301; Ben Witherington Acts of the Apostles 1998, 557-8।
10. कलीसिया के मुख्य शिक्षकों में से एक, अपुल्लोस को प्रिस्किल्ला द्वारा सुधारे जाने के बारे में देखिए Men and Women in Christ, 207, 227 (अध्याय 11, "The nature of the disagreement" के अंतर्गत, और "3. Authoritative teaching as a special category?" के अंतर्गत), 240 (अध्याय 12, "The historical context" के अंतर्गत)।
11. यूनिया के प्रेरित-पद के बारे में देखिए Men and Women in Christ, 299-306 (अध्याय 14, "Women's prominence in the young churches" के अंतर्गत)। पूरे कलीसियाई इतिहास में, पूरकतावाद के हाल ही में प्रकट होने तक, यूनिया को एक मिशनरी प्रेरित माना गया। उसकी विशिष्ट स्थिति संभवतः यह समझाती है कि उसे पौलुस के साथ बंदी क्यों बनाया गया। अपने लेख में विल्सन उचित ही स्वीकार करते हैं कि यूनिया एक प्रेरित थी।
12. Bible Gateway पर उपलब्ध 54 अंग्रेज़ी संस्करणों में से (मई 2022 की स्थिति) केवल चार ही इब्रानी שמר का अनुवाद "रखवाली करना" (bewachen) करते हैं। इसके अतिरिक्त चार "पर निगरानी रखना" और एक "देखभाल करना (हिफ़ाज़त करना)" अनुवाद करते हैं। NIV और ESV सामान्य सहमति को प्रस्तुत करते हैं ("to work it and take care of it"; "to work it and keep it")।
13. निर्गमन 18:4; व्यवस्थाविवरण 33:7, 26, 29; भजन संहिता 20:2; 33:20; 70:5; 89:19; 115:9-11; 121:1-2; 124:8; 146:5; होशे 13:9; यशायाह 30:5; दानिय्येल 11:34 में 'ēzer के उपयोग का संदर्भ देखिए। (इनमें से कुछ हवालों में बात यह है कि अपेक्षित रक्षा नहीं मिलती।)
14. इसके अतिरिक्त विल्सन कहते हैं कि पतन के लिए आदम उत्तरदायी है और हम सब आदम में मरते हैं, न कि हव्वा में। परन्तु उत्पत्ति 3 में परमेश्वर आदम और हव्वा दोनों से लेखा लेता है। उत्पत्ति 2-3 को गलत न समझने के लिए हमें ध्यान देना होगा कि लेखक व्यक्ति के रूप में "आदम" और "मानवजाति" के अर्थ में "आदम" के दोहरे अर्थ का कुशलता से उपयोग करता है। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 3:22-24 में ऊपरी तौर पर केवल आदम को निकाला जाता है, परन्तु अभिप्राय मानवजाति से है। 1 कुरिन्थियों 15:22 में पौलुस का तर्क मानवजाति के प्रतिनिधि के रूप में "आदम" की धारणा पर आधारित है।

15. शायद वह उस प्रकार की स्त्री है जिसकी कल्पना राजा लमूएल की माता उसकी भावी पत्नी के रूप में करती है: देखिए नीतिवचन 31:1।

16. प्रकाशितवाक्य 21:12-14 पर अधिक के लिए देखिए Ian Paul, Revelation (Tyndale New Testament Commentaries), 349-350।

17. कुछ उदाहरणों के लिए देखिए मत्ती 19:28; मरकुस 10:30; लूका 20:34-35; 2 कुरिन्थियों 5:17; इफिसियों 1:21; तीतुस 2:12; इब्रानियों 6:5। इस विषय और उसके महत्व पर एक संक्षिप्त परन्तु व्यापक अध्ययन Ian Paul, Kingdom, Hope, and the End of the World; living in the now and not yet of eschatology (Grove Books, Cambridge, 2016) में मिलता है।

18. लूका 22:49-51; मत्ती 5:39, 44; 1 पतरस 2:21-23; रोमियों 12:17-21; 2 तीमुथियुस 2:25; याकूब 5:20।

19. लूका 22:38 ("बहुत हैं") या तो एक डाँट है, या यह कथन कि यह सुनिश्चित करने के लिए दो तलवारें पर्याप्त हैं कि गतसमनी की वाटिका तक उनकी यात्रा और वहाँ उनका ठहरना समय से पहले बाधित न हो। रोमियों 13:1-4 में शासकीय अधिकारियों का कार्य समझाया गया है, न कि कलीसिया का।

20. विल्सन ने स्वयं 5 मई 2022 को लिखा: "यीशु ने लोगों के विरुद्ध कभी हिंसा का उपयोग नहीं किया, न अपनी रक्षा के लिए और न निर्दोषों की रक्षा के लिए। वह अपने चेलों को इसी प्रकार जीना सिखाता है, कि बुराई का सामना न करें और दूसरा गाल भी फेर दें (मत्ती 5; लूका 6)। हर बार जब कोई चेला सुसमाचार के दायरे में हिंसा का उपयोग करने का प्रयास करता है या उसकी धमकी देता है, चाहे वह निर्दोषों की रक्षा के लिए ही क्यों न हो, मसीह उसे डाँटता है (लूका 9 और 22; यूहन्ना 19)। प्रेरित नियमित रूप से यीशु के दुखों को एक ऐसे उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करते हैं जिसका अनुसरण विश्वासियों को करना है (रोमियों 12; फिलिप्पियों 2; 1 पतरस 2)। ... । हमारी लड़ाई सांसारिक शत्रुओं से या सांसारिक हथियारों से नहीं है (इफिसियों 6)। मसीही मार डालने के द्वारा नहीं, बल्कि मरने के द्वारा विजयी होते हैं: मेम्ने के लहू के द्वारा, अपनी गवाही के वचन के द्वारा, और इसके द्वारा कि हम मृत्यु तक अपने प्राणों को प्रिय नहीं जानते (प्रकाशितवाक्य 12)।"
https://thinktheology.co.uk/blog/article/how_should_christians_think_about_gun_control

21. हमें यह भी ध्यान देना चाहिए कि एक विशेष (पुरुष) लेवीय याजकपद का विकास स्वयं इस्राएल की असफलता का चिह्न है, क्योंकि वह तभी उत्पन्न होता है जब सोने के बछड़े के द्वारा लोग मूर्तिपूजा में बहक जाते हैं (निर्गमन 32), जिसके विरुद्ध केवल लेवीय खड़े होते हैं (पद 26-29)। अपने लोगों के लिए परमेश्वर का पहला अभिप्राय यह था कि वे सब "याजकों का राज्य" हों (निर्गमन 19:6), एक ऐसा दर्शन जो अब मसीह में और मसीह के द्वारा साकार होता है (प्रकाशितवाक्य 1:6)।

22. 1 पतरस 3:7 इसी तथ्य की ओर संकेत करता है। पतरस यह कहना चाहता है कि मसीही पुरुषों को अपनी पत्नियों के प्रति विचारशील होना चाहिए। यह शारीरिक पूरकता का एक रोचक उदाहरण है, क्योंकि सहनशक्ति, दर्द सहने और ठंड सहने के मामले में स्त्रियाँ सामान्यतः पुरुषों से अधिक सशक्त होती हैं।

23. 1 कुरिन्थियों 14:26 में भविष्यद्वाणी या उपदेश लाने वाले पुरुष या स्त्रियाँ हो सकते हैं, जैसा हम 11:2-14:33 में देखते हैं। यहाँ "उपदेश" के लिए शब्द didachē है, जिसका उपयोग 1 कुरिन्थियों 14:6 में पौलुस की शिक्षा के लिए और यीशु, प्रेरितों, तीमुथियुस और प्राचीनों की शिक्षा के लिए भी होता है (मत्ती 7:28; प्रेरितों के काम 2:42; 2 तीमुथियुस 4:2; तीतुस 1:9)। जहाँ तक 1 कुरिन्थियों 14:34-35 में स्त्रियों के बोलने पर प्रतिबंध की बात है, ऐसे सशक्त हस्तलिपि-प्रमाण हैं कि ये दोनों पद एक बाद का जोड़ हैं, जो पौलुस से नहीं आए। जो लोग इन्हें प्रामाणिक मानते हैं, उन्हें अभी (a) प्रमाणों की एक सचमुच संभावित व्याख्या देनी है जो उनकी कथित प्रामाणिकता से मेल खाए, और (b) एक संतोषजनक पठन देना है कि वे संदर्भ में कैसे बैठते हैं। देखिए Men and Women in Christ, अध्याय 9 और 10।

24. दो सूचियाँ हैं, 1 तीमुथियुस 3:1-7 में और तीतुस 1:5-9 में। 1 तीमुथियुस वाला खंड कुछ अधिक विस्तार से लिखा गया है। सूची का हमारा सिंहावलोकन Men and Women in Christ, 318-319 (अध्याय 15, "Do Paul's requirements include or exclude women?" के अंतर्गत) से लिया गया है।

25. उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम 17:34 में दमरिस (Damaris) (एक स्त्री) उन andres (पुरुषों) में है जिन्हें पौलुस संबोधित करता है (17:22) और जो पौलुस के संदेश पर प्रतिक्रिया देते हैं। विस्तृत चर्चा Men and Women in Christ, 319-323 (अध्याय 15, "Do Paul's requirements include or exclude women?" के अंतर्गत) में मिलती है। इब्रानी भाषा का प्रयोग भी ऐसा ही है। आज्ञा "तू अपने पड़ोसी की स्त्री का लालच न करना" (निर्गमन 20:17) किसी स्त्री को अपनी पड़ोसिन के पति का लालच करने की अनुमति नहीं देती।

26. Douglas Moo, 'The Interpretation of 1 Timothy 2:11-15: A Rejoinder'. (1981) TrinJ 2, नई शृंखला (New Series): 198-222, 211; Tom Schreiner, 'Philip Payne on Familiar Ground: A Review of Philip B Payne, Man and Woman, One in Christ" (2010) JBMW 15, अंक 1: 33-46, 35।

27. Recovering Biblical Manhood and Womanhood: A Response to Evangelical Feminism, 56।

28. नीतिवचन 1:8; प्रेरितों के काम 16:40; 1 कुरिन्थियों 1:11; कुलुस्सियों 4:15; 1 तीमुथियुस 5:14; 2 तीमुथियुस 1:5; 3:14-15।

29. 1 तीमुथियुस 2 पर अधिक के लिए देखिए Men and Women in Christ, अध्याय 11-13 और परिशिष्ट 3-6; और How God Sees Women, अध्याय 7।

30. चूँकि योग्यताओं की सूची नियम के बजाय मार्गदर्शक संकेत है, इसलिए 1 तीमुथियुस 3:2 ("सिखाने में निपुण") और 5:17 (केवल कुछ प्राचीन प्रचार करते और शिक्षा देते हैं) के बीच कोई विरोधाभास नहीं है। यह भी ध्यान दीजिए कि इसके उलट, एक वरदान-प्राप्त व्यक्ति प्राचीन हुए बिना भी शिक्षा दे सकता है (1 कुरिन्थियों 14:26; कुलुस्सियों 3:16)।

31. अधिक विवरण और व्याख्या के प्रस्ताव आपको Men and Women in Christ, 325-326 (अध्याय 15, "Do Paul's requirements include or exclude women?" के अंतर्गत), और How God Sees Women, परिशिष्ट 5, 339-341 में मिलेंगे।
32. Systematic Theology: An Introduction to Biblical Doctrine (1994), 944।
33. समाज में लैंगिक भिन्नता के व्यावहारिक प्रभावों पर विचार करते समय यह याद रखना उपयोगी है कि लिंगों के बीच अधिकतर अंतर अलग-अलग व्यक्तियों के बीच के अंतरों से छोटे होते हैं। सबसे तेज़ पुरुष धावक सबसे तेज़ स्त्री धाविकाओं से तेज़ हैं, पर एक स्त्री धाविका किसी पुरुष धर्मवैज्ञानिक से तेज़ दौड़ती है।
34. इस प्रवृत्ति के कुछ और उदाहरणों के लिए देखिए अपनी पुस्तक की कुछ अजीब समीक्षाओं पर Andrew Bartlett का संक्षिप्त उत्तर, 'Complementarianism and a listening problem?', Word from the Bird पर 11 मार्च 2022 को प्रकाशित, https://michaelfbird.substack.com/p/complementarianism-and-a-listening?s=r। (पर कृपया हमारे आशय में बहुत अधिक अर्थ न पढ़ें। हमने ऐसे मामले भी देखे हैं जिनमें समानतावाद के प्रति पक्षपाती वैचारिक प्रतिबद्धता का भी ऐसा ही प्रभाव हुआ।)
35. ऐतिहासिक रूप से देखें तो जिन धर्मवैज्ञानिकों का मत था कि केवल पुरुष ही अगुवाई कर सकते हैं, उन्होंने इस प्रतिबंध को लगातार पूरे समाज पर लागू किया, न कि चुनकर केवल कलीसिया की अगुवाई पर। देखिए https://www.psephizo.com/biblical-studies/the-historic-reading-of-1-tim-2/
36. हमें यहाँ यह टिप्पणी करनी चाहिए कि इसका अर्थ यह नहीं कि स्त्रियाँ और पुरुष बराबर संख्या में अगुवे, शिक्षक या सम्मेलनों में वक्ता हों, बल्कि केवल यह कि अगुवाई के पदों पर स्त्रियों के पूर्ण निषेध के लिए कोई बाइबलीय औचित्य नहीं है। इस विषय की चर्चा आपको https://www.psephizo.com/gender-2/should-women-be-on-platforms/ पर और उसके बाद के लेखों में मि-लेगी।